उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि० - पत्र

दिगंत - भाग - 2 गद्य भाग

शीर्षक - सम्पूर्ण क्रान्ति

लेखक - जयप्रकाश नारायण

प्रश्न :- 'सम्पूर्ण क्रान्ति' शीर्षक भाषण का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर :- 'सम्पूर्ण क्रान्ति' शीर्षक लेख 5 जून 1974 के पटना के गाँधी मैदान में दिये गए लोकनायक जयप्रकाशनारायण के भाषण का एक अंश है। सम्पूर्ण भाषण स्वतंत्र पुस्तिका के रूप में 'जनमुक्ति' पटना के प्रकाशित है। इनका भाषण सम्पूर्ण जनता मंत्रमुग्ध होकर सुनती रही। भाषण के बाद लोगों के हृदय में क्रान्तिकारी विचार धधक उठे और जन आन्दोलन ने विराट रूप धारण कर लिया। पटना के गाँधी मैदान में फिर न वैसी भीड़ इकट्ठी हुई और न वैसा कोई प्रेरक भाषण हुआ।

अपने भाषण के प्रारम्भ में जयप्रकाश नारायणने युवाओं को संकेत देते हुए कहा कि हमें तो स्वराज मिल गया है, लेकिन सुशासन के लिए अभी काफी संघर्ष करने होंगे। भाषण के क्रम में उन्होंने नेहरू-जी का उदाहरण दिया। नेहरू जी कहते थे कि सुशासन के लिए देश की जनता को अभी मीलों जाना है। कठिन परिश्रम करने हैं। त्याग करने हैं। जयप्रकाशजी ने कहा कि ~~हमें~~ अभी समाज में भूख, मँहगाई, भ्रष्टाचार जैसे दानव वर्तमान हैं। उनसे हमें लड़ना होगा। आन्दोलन करना होगा।

आन्दोलन को सफल बनाने हेतु उन्होंने युवाओं को आगे आकर नेतृत्व करने की सलाह दी। उन्होंने 'यूथ फॉर डेमोक्रेसी' का आह्वान किया। लोगों के आग्रह पर उन्होंने आन्दोलन के नेतृत्व का दायित्व अपने कंधों पर लिया। उन्होंने जन संघर्ष समितियों का गठन किया। शेष अगले कक्षा में।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०ऊ०सं० महावि० सुलतानगंज, पूर्णियाँ

15-09-20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र

जयद्रथ – वध

कवि – मैथिलीशरण गुप्त

करबाल-युत जब केतु-सम भूरिश्रवा का कर गिरा,
सब शत्रु तब कहने लगे इस कार्य को अनुचित गिरा,
वृषसेन, कर्ण, कृपादि ने धिक्कार अर्जुन को दिया –
"धिक्-धिक् धनंजय! पापमय दुष्कर्म यह तुमने किया"

भावार्थ

प्रस्तुत पंक्तियाँ षष्ठ-सर्ग से उद्धृत है। पाण्डवों और कौरवों की सेना में घमासान युद्ध चल रहा था। इसी युद्ध में अर्जुन ने भूरिश्रवा का हाथ काट दिया। इसके पश्चात् कौरवों की सेना प्रतिक्रिया व्यक्त कर रही है।

कवि कहता है कि जब अर्जुन के बाण से कट कर भूरिश्रवा का हाथ केतु के समान भूमि पर गिर पड़ा तो उस समय अर्जुन के उक्त कार्य को सभी शत्रु अनुचित कहने लगे। वृषसेन, कर्ण, कृपाचार्य आदि सभी कौरव दल के प्रमुख महारथी अर्जुन को धिक्कारते हुए कहते हैं कि हे अर्जुन तुम्हें धिक्कार है, धिक्कार है जो तुमने पाप से पूर्ण यह बुरा कर्म किया है।

यहाँ उस घटना का उल्लेख करना आवश्यक है, जब सात-सात महारथियों अकेले निहत्थे वीर अभिमन्यु पर एक साथ प्रहार कर रहे थे। तब कौरवों की सेना के प्रमुखों को क्यों नहीं लगा कि बालक अभिमन्यु पर हमलोग एक साथ मिलकर जो प्रहार कर रहे हैं वह अनुचित है।

वस्तुतः इस युद्ध में वही हो रहा है पाण्डवों की सेना की ओर से जो अर्जुन के सारथी भगवान श्री-कृष्ण संकेत करते हैं।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० खुरखेनी, पूर्णियाँ।

15/09/20

में सम्मिलित हो गये। इसके साथ ही कॉंग्रेस से उनका नाता टूट गया। परन्तु उन्होंने अपने संस्मरणात्मक निबंध में यह लिखा है कि गाँधीजी को जब इसकी जानकारी हुई तो वे हँस पड़े। उन्होंने कहा कि रामनन्दन मेरा है। वह कहीं अन्यत्र जाने वाला नहीं है। यह जानकर मिश्र जी को गाँधी जी के प्रति और अधिक श्रद्धा हो गयी।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं०महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
15/09/20

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

'निबंधमाला'

शीर्षक - 'गाँधी जी और मैं'

लेखक - पंडित रामनंदन मिश्र

प्रश्न :- लेखक को साबरमती आश्रम क्यों अच्छा लगता था। वे कब सोशलिस्ट पार्टी में शामिल हुए इसका मुख्य कारण क्या था।

उत्तर :- पंडित रामनन्दन मिश्र ने अपने संस्मरणात्मक निबंध में गाँधी जी के साथ व्यतीत किए गये पलों का विस्तार से वर्णन किया है। लेखक श्रीमिश्र जी को साबरमती का निवास बहुत अच्छा लगता था। इस आश्रम में आकर्षण के कार्यक्रमके अतिरिक्त यहाँ मिश्र जी के लिए दूसरे आकर्षण आचार्य कृपलानी जी थे और तीसरी सारा भाई की पुत्री मृदुला सारा भाई थी। मृदुला जी युथ लीग का संचालन करती थीं।

साबरमती आश्रम में नियमानुसार, सबको एक घंटा श्रम करना पड़ता था। इस समय गाँधी जी स्वयं तरकारियाँ काटते थे। रामनन्दन जी को हंडा माँजने का काम मिलता था। एक बार रामनन्दन जी गाँधी जी के साथ भोजन कर रहे थे। सब्जी उबाली हुई थी। गाँधी जी ने पूछा कि रामनन्दन जी को सब्जी कैसी लग रही है। रामनन्दन जी ने जवाब दिया: सब्जी तो मैं खींच के साथ खा लेता हूँ। परन्तु बापू जी मुझको एक शिकायत करनी है। गाँधी जी ने कहा कि अवश्य कहिए। पंडित मिश्र जी कहते हैं कि यहाँ तो मुझसे चार जनों का काम लेते हैं पर घी मात्र एक चम्मच देते हैं। गाँधी जी हँस पड़े। उन्होंने आदेश दिया कि कल से रामनन्दन जी चार चम्मच घी दिया जाए।

1930 ई० और 1932 ई० में जब सत्याग्रह-आन्दोलन ~~समाप्त~~ विफल हो गया तो पंडित रामनन्दन मिश्र जी नवगठित सोशलिस्ट पार्टी

शेष आगे -